

## अध्याय 1

### प्रस्तावना

#### गीत के रूप में महिलाओं के रुदन का अध्ययन और विश्लेषण

रुदन मानव हृदय का सहज उदगार है । यह भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम है । भारतीय संस्कृति तथा विश्व संस्कृति में परम्परागत तौर से गीतात्मक रूप में गाये जाने की प्रथा पायी जाती है ।

रुदन गीत मानव जीवन, उसके उल्लास, उसके करुणा की, उसकी रूदन एवं समस्त दुख की कहानी को चित्रित करता है । रूदन गीत एक प्रकार का लोकगीत है । यह विश्व के लगभग सभी विकसित तथा अर्द्ध-विकसित देशों में शोक प्रकट करने का माध्यम है । यह कहीं मौलिक रूप तो कही व्यवसायिक रूप से शोक प्रकट करने का माध्यम है ।

रूदन गीत की परम्परा बहुत प्राचीन है । भारतीय परम्परा के अनुसार रुदन गीत का प्रमाण वैदिक काल से ही है । जिसे ऋगुवेद के श्लोकों के माध्यम से दर्शाया गया है । भारतीय संस्कृति में हिन्दू परम्परा के अनुसार मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक सोलह संस्कार होते हैं जो गीतात्मक रूप से गा कर मनाये जाते हैं । कुछ संस्कार गीतों में हर्ष-उल्लास की अभिव्यक्ति होती है तो कुछ विषाद और करुणा की झलक दिखाई पड़ती है । संस्कार की दृष्टि से मुझे दो संस्कारों के अवसर पर रूदन गीतों गाये जाने की जानकारी मिलती है । एक विवाह संस्कार, जिसमें सुखात्मक और दुखात्मक दोनों प्रकार के गीत गाये जाते हैं, जिसमें विदाई के अवसर पर करुणा प्रधान गीत गाये जाते हैं, जो असंरचित होते हैं । दूसरा मृत्यु के संस्कार के अवसर पर गाये जाते हैं ।

रुदन गीत को भाव के आधार पर दो पक्षों में बांट सकते हैं ।

- 1) वियोगात्मक के रुदन गीत
  - a) विदाई
  - b) वियोग
  - c) मृत्यु
  - d) अपने प्रिय जनों से भेंट करते वक्त रुदन गीत

## वियोगात्मक रुदन गीत

### मैथिली तथा राजस्थानी गवना गीत –

मिथिला में गवना के गीतों को 'समदाऊनि' कहते हैं। इसके विषय में श्री राम इकबाल सिंह कहते हैं 'विवाह संस्कार' की समाप्ति के बाद जब दुलहिन डोली में बैठकर ससुराल जाने की तैयारी करती है। उस समय मिथिला में विशिष्ट शैली का गीत गाया जाता है, जो 'समदाऊनि' के नाम से प्रसिद्ध है। 'समदाऊनि' का सबसे बड़ा गुण है स्वाभाविता, इन 'समदाऊनि' के गीतों में पुत्री के प्रति माता और पिता का प्रेम उमड़ पड़ता है और पुत्री के आँखों से निरन्तर आँसू प्रवाहित होता रहता है। गीत के माध्यम से बेटी की जुदाई में बिसूरती हुई माँ और माँ की याद में तड़पती हुई बेटी दोनों अपनी हृदय वेदना को गीत के माध्यम से रो-रो कर गाती हैं।

राजस्थानी भाषा में गवना के गीतों को 'ओलू' कहते हैं। इनके भाव इतने करुण होते हैं कि सुनकर आँसू रोकना कठिन हो जाता है। स्त्रियाँ गाती हुई जोर-जोर से रोने लगती हैं। पुरुषों की भी आँखें भर आती हैं।

ब्रज के भी विदाई गीत बड़े मार्मिक होते हैं। इन गीतों में विदा होती हुई लड़की, पिता, भाई तथा माँ की हृदय द्रविकता तथा विविध मनोवृत्तियों का गीतात्मक वर्णन मिलता है।

इलाहाबाद परिश्रेत्र में गाये जाने वाले विदाई गीत---

इस परिश्रेत्र में विदाई के अवसर पर जो गीत गाए जाते हैं। वे करुणा से ओत-प्रोत होते हैं। इन गीतों में लड़की ससुराल जाते समय अपने सगे संबंधी, माता-पिता, भाई- बहन, सखी- सहेली सभी से मिलकर अपने बचपन की घटी सुखात्मक और दुखात्मक यादों को गीतों के माध्यम से रो-रो कर प्रकट करती है। जिससे आस-पास उपस्थित सभी जनो का हृदय करुणा से भर जाता है। वह लड़की अपने सभी जनों से गीत के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त करती है। मैं आप सब के साथ बचपन से लेकर अब तक के सुख- दुख मिलकर सहे हैं। आज आप सब ने मुझे बेगाना कर दिया। माता अपनी बेटी के बचपन से लेकर आज तक की सहयोगात्मक, प्यार-दुलार सब बातों को याद कर के गीतात्मक विलाप करती है। वह जिस ढंग से उसकी परवरिश की रहती है, जिन चीजों को वह पूरा नहीं कर पायी थी, उन सब बातों को गीत के माध्यम से प्रकट करती है।

उदाहरण के रूप में मैं इस करुणाजनित गीत को देख सकते हैं।

अरे मोरी मांवा कइसे के ज बोधवा करबु मयगरियाँ

कौन बिटियों बोलबै मयगरियाँ

अरे मोरे रनियां कैसे ज सबुरवा करबइ मोर रनिया

अरे मोर बपई जनी –जनी मुडवा काटा मोर बपई

कौने मडरवा ज झोके मोरे बपई

अरे मोरी बहिनी तोहरई ज संगवा छूटे मोही बहिनी

अरे मोरी दीदी कौउनई बिहनियां बोलबे मोरी दीदी

अरे मोरे भईया मैंही ज बेगनवा कीहे मोरे भईया

अरे मोरी भौजी मैं सुधिया जी भुलाऊ मोरी भौजी

### अपनई रनिया जे समझू मोरी भौजी

इस रूदन गीत से लड़की की भावनाओं का यथार्थ रूप हमारे सामने दिखाई देता है, वह अपने मां, बाप, भाई, बहन, भौजी आदि से मिलकर अपने को बेगाना बना दिये जाने और भाभी से अपना ख्याल रखने के लिए कहती है।

इस गीत में लड़की अपनी माँ से कहती आप मुझे कैसे भुला पाएंगी। किस बेटी को बुलाओंगी, माँ कहती है बेटी तुम्हारे बिना हमारे दिल को तसल्ली कैसे मिलेगी।

और पिता से लड़की रोकर कहती है, कि आप लोग मुझे अपने से अलग करके हमारा गला काट दिए पता नहीं किस जगह हमारा संबंध बना दिए।

बहन से रोकर कहती है कि अब हमारा साथ छूट गया।

भाई से रोकर कहती है आपने मुझे बेगाना बना दिया और भाभी से रोकर कहती है भाभी मेरा ख्याल रखना और मुझे अपनी बेटी जैसी ही मानना।

### पंजाबी विदाई गीत

पंजाब में भी बिदाई गीत गाए जाते हैं। जिनमें करुणरस की प्रधानता होती है, इसमें संदेह नहीं की पुत्री की विदाई का समय बड़ा दुःखदायी होता है। ऐसे अवसरों पर कठोर से कठोर हृदय भी द्रवित हो जाते हैं।

#### पंजाबी बिदाई गीत का उदाहरण

“साँडा चिडियाँदा चम्बा वे बावल असी उड़ जाना

साडी लम्बी उडारो वे, बाबल के हड़े देशजाना

तेरा चौका भाण्डा वे बावल तेरा कौने करे ?

तेरा महल दाँ विचविच वे बावल मेरी मा रोवे”

कन्या, विदाई के समय अपने पिता से कह रही है। ए पिता जी मैं तो एक चिड़िया हूँ मुझे तो एक दिन उड़ जाना होगा। ए पिता जी मेरी उड़ान लम्बी है, मुझे किसी अनजान देश में उड़कर जाना होगा। ए पिताजी मेरे बिना आपका चौका बर्तन कौन करेगा ? घर में बैठी हुई मेरी माँ विदाई के अवसर पर रो रही है।

### राजस्थानी विदाई गीत का उदाहरण

“ एक वर करला था रा ,मारु जी पिछा जी मोड़ ।

राजीदा ढोला ओलूँ घणी आवै म्हारा बाबो-सारी ।।

एक वर ओ मारुजी, करला जी पाछा मोड़ ।

राजीदा ढोला, ओलूँ घणी आवै म्हारी मायरी”

कोई राजस्थानी नववधू अपने पति के साथ ऊँट पर बैठकर विवाह के पश्चात सुसराल जा रही है, वह अपने पति से कहती है ऐ प्रियतम केवल एक बार अपने ऊँट को लौटा लो मुझे अपने पिता की याद आती है। इसी प्रकार वह अपनी माता, भाई और छोटी बहन को देखने के लिए अपने पति से ऊँट को माइके ले चलने के लिए बार-बार कहती है।

### भोजपुरी विदाई गीत का उदाहरण

“ दुवरा भूलीस भूली बाबा जे रोवेले

कतही न देखो हो बेटी नुपुरवा हो तोहार

आँगाना भूलोए भूलो आमा जे रोवेली,

कतही न देखो हो बेटी, सरोइया झाझाकाल

रसोइया भूलीए भूली भउली जे रोवेली

कतही ना देखो हे बेटी, रसोइया झाझाकाल ”

इस गीत में पुत्री की विदाई से व्याकुल होकर पिता घर के दरवाजे पर बैठा हुआ रो रहा है और कह रहा है ऐ बेटी अब मैं कहीं नूपूर(पायजेब) नहीं देख रहा हूँ, आँगन में बैठी माता रो रही है। और रसोईघर में बैठी भौजी(भाभी) आँसू बहा रही है, माता कहती हैं, मेरी बेटी कहीं दिखाई नहीं पड़ती उसके बिना रसोईघर सूना (खाली) लगता है।

**मृत्यु गीत** – रुदन गीतों में करुणामय भाव होता है, जो मुझे विदाई, गवना, वियोग आदि समय पर दिखाई पड़ता है। लेकिन मृत्यु के गीतों में करुणा अपने पराकाष्ठा पर होती है। मृत्यु के अवसर पर शोक प्रकट करने की परम्परा विश्व के लगभग सभी देशों में पायी जाती है। जहाँ लगभग सभी सम्प्रदाओं के लोगों के द्वारा किसी न किसी रूपों में शोक प्रकट किया जाता है। लेकिन गीतात्मक रुदन भारत तथा यूरोप के कुछ देशों में हीपाया जाता है। यह रुदन कुछ जगहों पर मौलिक रूप से किया जाता तथा कुछ जगहों पर काल्पनिक और व्यवसाय के रूप में अपना लिया गया है, इसको यूरोपीय मृत्यु गीतों के माध्यम से समझा सकता है। यह किसी व्यक्ति के मृत्यु होने पर शोक प्रकट करने की परम्परा लगभग सभी संस्कृतियों में पायी जाती है।

### यूरोपीय देशों में मृत्यु गीत

यूरोपीय देशों में भी मृत्यु गीत की प्रथा प्रचलित है होमर द्वारा संपादित ग्रंथ इलियड के अंतिम भाग में जनता के दुख तथा विलाप की मर्मस्पर्शी वर्णन मिलता है, वह मृत्यु गीत का प्राचीन उदाहरण है। आयरलैंड में किसी व्यक्ति के मर जाने पर सामूहिक रूप से विलाप करने की प्रथा भी प्रचलित है। यद्यपि इसका धीरे-धीरे हास हो रहा है, इन विलाप गीतों को किन्स कहते हैं। इन गीतों का स्पष्ट रूप से उच्चराण किया जाता है। इनमें एक विशेष प्रकार की लय होती है। इनमें मृत व्यक्ति के गुणों का वर्णन होता है, और अपने परिवार को छोड़कर चले जाने के लिए

उसको उलाहना दिया जाता है, ऐसे अवसर पर रोने वाले प्रायः पेशेवर लोग होते हैं, उनके गीत तत्काल बनाये हुये न होकर परंपरा से चले आते हुये प्राचीन होते हैं।

कार्सिका- कार्सिका टापू में यह प्रथा प्रचलित है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु के समय से लेकर उसके दफनाये जाने तक रोने तथा विलाप करने का क्रम जारी रहता है। जब क्यो आदमी मर जाता है, तब उसकी सूचना संबंधियों को दी जाती है, जो शीघ्र ही दल बनाकर मृत व्यक्ति के गहर पहुँचते हैं, एक कमरे में सभी इकट्ठा हो जाते हैं, मृत्यु गीत प्रारंभ हो जाता है। मृत व्यक्ति की विधवा पत्नी मृत्यु गीत गाती है। जिसमें अपने पति की प्रशंसा और उसके जीवन की प्रधान घटनाएँ होती हैं। फिर इतने जोरों से मर्मस्पर्शी तथा हृदय- विदारक लययुक्त विलाप करती है। वहाँ उपस्थित स्त्रियाँ दुख अभिभूत होकर बेहोस हो जाती है। वह अपने नाखून से शरीर के मांस को काटने लगती है। जमीन पर गिर पड़ती है और अपने ऊ में धूल मलने लगती है जब पति किसी आकस्मिक दुर्घटना के कारण मृत्यु की प्राप्त होता है। तब उसकी पत्नी उसके गुणों का वर्णन इस प्रकार करती हुई रोती है।

*You were my flower my thorn less rose*

*My stalwart one, my column my Bronte*

*My hope, my prop, my esteem gem*

*My most beautiful treasure.*

फ्रांस के दक्षिण पश्चिमी भाग में मृत्यु गीत गाने की परंपरा बहुत दिनों तक रही। गैस्कीनी की बूढ़ी स्त्रियाँ आज भी इन गीतों की स्मृति की सुरक्षित बनावे हुई है। गैस्कन के गीत गद्यात्मक है। जिसमें विस्मययादि बोधक अव्ययों की प्रधानता है। जॉन नामक व्यक्ति के मरने के बाद उसकी स्त्री इस प्रकार विलाप करती है।

मोंटेनेग्रो में शोक गीत की प्रथा आदिम रूप में पायी जाती है। सन 1877 ई के युद्ध में निरीक्षण का अनेक बार अवसर मिला ओस्ट्रांग में एक ऐसी ही घटना घटी जिसमें कोई सैनिक घायल अवस्था में अस्पताल पहुँच गया। जो दो-तीन दिन में मर गया। इस पर उसकी स्त्री तथा बहन ने कुहराम मचाया जिसका वर्णन कठिन है वे छाती पीटने लगी अपने मुख तथा बालों को नोचने लगी वह मिलों सुनाई पड़ता था। मृत पति को दफनाने के बाद वे फिर कठिनाई से वे वहाँ से जा सकी।

इटली के मृत्यु गीत- दक्षिण इटली के निवासी जो ग्रीक भाषा बोलते हैं, शोक गीतों के लिए एक विशेष अवसर पर रोने वाली सार्वजनिक स्त्री होती है। उस स्त्री की मृत्यु के उपरांत उसके पद को उसकी पुत्री ग्रहण करती है वह सार्वजनिक रोदनकरती- शोक गीतों के निर्माण में तथा उनकी गाने में बड़ी चतुर होती है। वह इस बात को जानती है कि यह दुख मेरा नहीं बल्कि पराया है, परंतु श्रोताओं के सामने वह दुख की अधिशृङ्गात्री देवी मालूम होती है। परंतु कुछ ऐसे भी शोक गीत मिलते हैं। जिनमें वास्तव में प्रेम तथा करुणा का सुख उमड़ पड़ता है।

प्यारी पुत्री की मृत्यु पर किसी कृषक माता पिता का काकगिक प्रलाप

*Now they have buried thee, my little one,*

*Who will make the little bed ?*

*Black death will make it for me*

*For a very long night*

*Who will arrange the pillows*

*So thou mayst sleep softly ?*

*Black death will arrange them for me*



*With hard stone*

*Who will awake thee my daughter*

*When day is up ?*

*Down here it is always sleep.*

*Always dark night*

*This I went daughter was tair*

*When I went (with her) to high mass*

*The columns stone*

*The ways grow bright.*

व्याख्या- पत्नी-पति के गुणों का वर्णन करती है उसका पति गुलाब के समान सुंदर फूल जैसा था ऐसा गुलाब का फूल जिसमे काटें नहीं थे । अर्थात पति उसका ऐसा था । जिसमें कोई बुराई नहीं थी बहुत सरल हृदय वाला था वह महिला उसे अपने भाई के समान देखती है जो उसके सुख दुख का साथी हुआ करता था । वह अर्थात उसका पति उसके जीवन की आशा असंभव और बहुमूल्य रकम के समान था ।

दक्षिण पैसिफिक द्वीप निवासी मृत व्यक्ति के विषय में कहते हैं । वह समुद्र के ऊपर से जा रहा है । एक मृत्यु गीत में दी बल्कि प्रेतमा की यात्रा का वर्णन किया गया है ।

*The god pet child is a bad one*

*For thy body is attenuated*

*This was ting sickness must end they days.*

*Thy for, once so plump now has changed*

*Ah ! that god, that bad god !*

*Inexpressible bad, my child*

व्याख्या- मृत बच्ची की माँ बच्ची की कब्र में दफना दिये जाने पर रोटी हुई कहती है

मेरी छोटी बच्ची जहाँ तुम्हें दफना दिया गया है। वहाँ तुम्हारे लिए छोटा विस्तार कौन लगाएगा

अर्थात् वह महिला उसके लिए छोटा बिस्तर लगती थी

*अब मृत्यु ने बिस्तर लगा दिया है*

*जहाँ हमेशा रात रहती है।*

*तुम्हारे लिए मुलायम तकिया कौन लगाएगा*

अर्थात् वह महिला उस बच्ची के लिए मुलायम तकिया लगती थी लेकिन मृत्यु में उसके लिए पत्थर की कठोर तकिया की व्यवस्था की है। तुम्हें कौन जगाएगा जब सूरज निकल आयेगा

अर्थात् उसकी माँ उसे सुबह उसे उठती थी लेकिन वह अब कम में सदा के लिए सो गई है

जहाँ हमेशा घनी रात है। वह मेरी पुत्री बहुत सुन्दार मेरे जीवन का आधार थी अब उसे चारों तरफ से पत्थरों से ढक दिया गया है

और उसके ऊपर चमकते पत्थर का खंभा लगा दिया गया है।

सी. ई. ग्रोवर ने निलगिरी की पहाड़ियों में निवास करने वाली बडागा जाति के मृत्यु गीतों का उल्लेख किया है। जिसमें प्रेतात्मा के सभी दुर्गुणों का वर्णन उपलब्ध होता है। इस अवसर पर एक विशेष प्रथा प्रचलित है। रोने वाले के बीच में एक हुष्ट-पुष्ट भैंस का बच्चा लाया जाता है।

प्रधान दुखिया व्यक्ति भैंस के बच्चे को अपने हाथ से छूती है इस प्रकार प्रेतत्मा का सारा दोष उस पर संक्रमित हो जाता है। इस गीत में प्रेत के भिन्न-भिन्न दोषों को इस प्रकार गिनाया गया है।

*He kelled the crawling snake*

*(chorus) it is a sin*

*The creeping lizard slew*

*It is a sin*

*Also the hawk less trog.*

*It is a sin*

*Of brothers he told tales*

*It is a sin*

*The land mark stone he moved*

*it is a sin*

*the stranger straying on the hills.*

*He offered aid but guided wrong*

*It is a sin*

*His sister tender love he spurned*

*And showed his teeth her in rage it is a sin*

पिता मृत बालक की मृत्यु के कारण प्रेतत्मा को बताता है

जो उसके प्यारे बच्चे की बुरा बना दिया

पहले उसके बच्चे को कमजोर बनाया  
 फिर बीमारी के रूप में उसका जीवन खत्म कर दिया  
 जो पहले मोटा और सुंदर था  
 अब उसे बदसूरत और कठोर बना दिया है ।

वह प्रेतात्मा बहुत बुरा है ।  
 जिसका मैं वर्णन नहीं कर मेरे बच्चे ।  
 इस प्रकार उसके दोषों का वर्णन कर वह रोकर कहती है ।

*Oh ! let us never doubt*

*That all his sins are gone*

*That bassava for gives*

इसमें भी मृत्यु का कारण बुरी आत्मा को बताया है जो पाप का काम करता है अर्थात् मृत्यु है ।

जिसने रेंगते सोप को मार दिया पाप है ।

रेंगती छिपकली को मार दिया ।

फुदकते मेढक को मार दिया

मेरा भाई मार दिया

पहचान के रूप में लगे पत्थर अपने स्थान से दूसरे स्थान पर चले गए

यह सब पाप के कारण

वह अजनबी को बहका कर मौत के मुँह में ढकेल देता है ।

वह पाप है ।

वह रही गलत रास्ता बताता है ।

वह पाप है ।

उसकी बहन प्यार को नकार देती है ।

वह अपने दाँतों को दिखाकर डरती है ।

यह पाप है । जिसमें इतने बुरे काम किए ।

यह प्रेतत्मा का ही काम है ।

अतः मनुष्यता के अनुसार प्रधान दुखिया महिला भैंस के बच्चे को पकड़ कर रोटी है और विश्वास करती है । यह प्रेतात्मा उसे बच्चे के अंदर प्रवेश कर जाएगी जिससे और लोग मृत्यु से बच जायेंगे।

**भारत में मृत्यु गीत की परम्परा** - भारत में भी मृत्यु गीत की परम्परा बहुत प्राचीन है । इसका प्रमाण वैदिक काल से ही मिलता है । जिस का प्रमाण ऋग्वेद है । इसमें अनेक सूत्र ऐसे मिलते हैं जिसमें मृत व्यक्ति के सम्बन्ध में शोक प्रकट किया गया है । भारत में भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय के लोग हैं, जो भिन्न-भिन्न तरीकों से शोक प्रकट करते हैं । हिन्दू सम्प्रदाय में इसे संस्कार का अंग माना जाता है । लेकिन अन्य सम्प्रदायों में इसे संस्कार नहीं मानते लेकिन शोक प्रकट करने की प्रथा प्रचलित है । मुस्लिम सम्प्रदाय में भी मृत्यु के अवसर शोक प्रकट किया जाता है जिसे मातम मानना कहते हैं ।

**मृत्यु गीत के भेद-** मृत्यु गीतों को विश्व के लगभग सभी देशों में मुख्यता निम्न प्रकार से गाया जाता है ।

**पहला प्रकार-** इसमें मृत्यु गीत मृत व्यक्तियों के गुणों का वर्णन कर गाया जाता है। जैसे- यदि कोई छोटा बच्चा है, और उसकी मृत्यु हो गयी तब उसकी सुंदरता भोलेपन तथा उसकी सरलता का उल्लेख इन गीतों में मिलता है।

**दूसरा प्रकार** –इस प्रकार का मृत्यु गीत कमासुत मृत व्यक्ति के प्रति गाया जाता है, जिसमें मृत व्यक्ति के कारण उत्पन्न कष्टों का वर्णन मिलता है। लेकिन भारत में एक तीसरे प्रकार का भी एक मृत्यु गीत है गाया जाता है। जिसमें मृतक व्यक्ति के विविध पदार्थों का नाम लेकर शोक प्रकट किया जाता है।

**भारतीय मृत्यु गीत** –भारत में मृत्यु गीत को हिन्दू समुदाय के लोग एक प्रकार का संस्करण मानते हैं। इसमें ऐसी परम्परा है की हिन्दू धर्म के 16 संस्कार हो जिसमें जन्म प्रथम संस्कार और मृत्यु अंतिम संस्कार है। हर संस्कार के अवसर पर गीत गाये जाने की प्रथा प्रचलित है। ऐसा वर्णन हिन्दू धर्मों के वेदों महाकाव्यों में इसका वर्णन मिलता है। रामायण तथा महाभारत में अनेक स्थलों पर विशेष व्यक्तियों की मृत्यु पर विलाप के अनेक प्रसंग आये हैं। जिन्हें मृत्यु गीत की कोटी में रखा जाता है।

इसका उदाहरण कालिदास द्वारा रचित कुमार सम्भव में देखने को मिलता है। जिसमें शिव के द्वारा कामदेव को अग्नि द्वारा नष्ट कर दिया जाता है। तब कम देव की पत्नी कामदेव के विभिन्न गुणों का वर्णन शोक प्रकट करती है।

*मदनेन बिना कृता रतिः*

*क्षणमात्र किल जीवतीतिमें ।*

*वचनीमिदे व्यवस्थिते*

रमण : वामनुयामि यधपि ।

भारत में मृत्यु संस्कार पर कुछ जगहों पर मौलिक गीत के रूप महिलाएं शोक प्रकट करती हैं । कुछ जगहों पर पेशेवर तरीके से गाकर इसे प्रकट करती हैं तथा कुछ जगह पर मृत्यु गीत नहीं भी गाये जाते हैं ।

भारत में राजस्थान प्रांत में मृत्यु गीत गाये जाने की परम्परा राजशाही घरानों में पायी जाती थी, जिसमें किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के मर जाने पर पेशेवर महिलाएं रुदन गीत के माध्यम से शोक प्रकट करती थी जो मौलिक नहीं हुआ करती थी । अब इसका हास होता जा रहा है । वहाँ पर किसी व्यक्ति की आसानी से मृत्यु को प्राप्त करने के लिए गऊदान अर्थात ब्राह्मण को गाय दान करने की प्रथा प्रचलित है । उत्तर भारत के उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्से में भी ऐसी मान्यता है कि गाय दान करने से प्राण आसानी से निकल जाता है ।

राजस्थान में पेशेवर महिलाएं ही रुदन गीत गाती हैं । ऐसा प्रमाण 'रुदाली' फिल्म से भी मिलती है जो की राजशाही घराने के सम्मान में शोक प्रकट किया जाता है ।

मुस्लिम संप्रदायों में भी शोक गीत गाये जाते हैं, जिसे "मर्शिया" कहते हैं । लेकिन यह उन्हीं मृत्यु व्यक्तियों के प्रति गया जाता है जो सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त विशेष व्यक्ति होते हैं । वैसे भी समान्य मृत व्यक्तियों के प्रति मातम कम ही मनाया जाता है। यहाँ मातम भिन्न देशों में भिन्न हो सकता है या कहें कि होता है । लेकिन भारत में इस संप्रदाय के मृत व्यक्ति के प्रति हिन्दुओं जैसी हीविलाप करने की प्रथा पायी जाती है । क्योंकि भारतीय मुस्लिम हिन्दू रस्म-रिवाज ज्यादातर अपना चुके हैं । इनमें मातम के अवसर पर स्त्रियों द्वारा पैर की एड़ी रगड़ना, छाती पिटना आदि भी दिखाई पड़ता है । हमारी जानकारी में हरदोई एक ऐसा जिला है जिसमें मृत्यु गीत का प्रसंग बिल्कुल भी नहीं

पाया जाता है तथा उत्तर भारत के कुछ जिलों में गीतात्मक रुदन किया जाता है। जैसे पूर्वाञ्चल में – देवरिया, बलिया, इलाहाबाद, लखनऊ, आदि जिलों में यह गीतात्मक रुदन किया जाता है।

### भोजपुरी क्षेत्र में गाया जाने वाला रुदन गीत –

इस परिक्षेत्र में मृत्यु के उपरांत मृतक व्यक्ति से सम्बंधित सभी लोग शोक प्रकट करते हैं। इस क्षेत्र में गाया जाने वाला मृत्यु गीत अधिकतर मौलिक होते हैं। कभी-कभार ऐसी स्थिति होती है, जब मृतक के पास रोने वाला नहीं होता है, तो उसके दूर के रिश्तेदार लोग वैसे दिखावटी मात्र रोक शोक प्रकट करते हैं। इस क्षेत्र में भी किसी की मृत्यु होने पर उससे सम्बंधित रिश्तेदारों को सूचित किया जाता है, और सभी मृतक व्यक्ति के घर पहुंच कर प्रधान दुखियाँ स्त्री के साथ मिलकर रुदन गीत गाकर शोक प्रकट करती है। प्रधान दुखिया स्त्री मृतक व्यक्ति से गहरा सम्बन्ध रखने वाले महिलाओं, पुरुषों, लड़के, लड़कियों की देखकर बहुत कारुणिक विलाप करती हैं। ये रुदन गीत भावना प्रधान होते हैं जो परिस्थिति अनुसार तुरन्त निर्मित होते हैं। मृत व्यक्ति से सम्बंधित स्त्रियों के रुदन गीत का भिन्न-भिन्न भाव होता है। जैसे किसी का लड़का मरा तो उसके रुदन गीत का भाव दूसरा तथा पति मरा तो दूसरा भाई मरा तो दूसरा भिन्न-भिन्न सम्बन्धों के भिन्न-भिन्न रुदन गीत होते हैं।

#### उदाहरण –

के मोरे नइयां पार लगाइए ऐ रामा :

अब कईसे के दिनवा काटीब ए रामा

अतना अरमवा मैरा के दिह

अब कौन दूरदशवा होइए ए रामा

यह गीत एक मृत व्यक्ति की विधवा पत्नी के हृदय वेदना का वर्णन करता है।



इसमें मृतक व्यक्ति के न होने पर जो कष्ट उठाने पड़ेंगे उसकी तथा उसके जीवित रहने पर दिये गये सुख सुविधाओं का वर्णन करती हैं, जिसमें वह अपने पति के लिये भगवान राम के नाम से सम्बोधित करती है। जैसे भगवान के बिना सब व्यर्थ है और बेकार लगता है जीवन का कोई अर्थ नहीं होता है, उसी प्रकार मृत व्यक्ति केई प्रति पत्नी कहती है, अब उसका जीवन कैसे बीतेगा पति ने उसके लिए बहुत सी सुख सुविधाएँ दे रखी थी वह पत्नी के सुख-दुख में साथ होता था, जिससे वह आसानी से जीवन की समस्याओं का निदान कर लेती थी। अब उसका पति जो अब जीवित नहीं है तो उसका जीवन निराश हो गया, इस विषम स्थिति की मृत शरीर के समझ अपने भावनाओं को प्रकट करती है।

### दूसरा उदाहरण

मैं नहीं जनलिविदेशवा में मरिहे

नाही त जाये न दिहति ए रामा

अब के हमार दिनवा पार लगाइए रामा

कवन घाटवा मैं लागवि ए रामा

इस गीत का भाव इस प्रकार है। महिला का पति परदेश को जाता है वाहन उसकी किसी बीमारी की वजह से मृत्यु हो जाती है और जब उसे पति की मृत्यु का संदेश प्राप्त होता है तो वहा ज़ोर-ज़ोर से रोकर विलाप करने लगती है। वह गीत के माध्यम से मृत पति के सम्बंधित माता-पिता पास पड़ोस के लोगों से कहती है अगर मुझे पता होता कि हमारे पति की मृत्यु विदेश में होगी तो मैं उनको जाने ही ना देते, जिससे उनकी मृत्यु न होती जैसे की भारतीय लोक गाथाओं में मिथक होता है उसी प्रकार वह पत्नी भी कहती है जैसे सावित्री जो एक भारतीय स्त्री है उसे उसके पति के मृत्यु का कारण पता है और वहा भगवान से भी प्राण दान माँग लेती है, उसी प्रकार महिला भी

कह रही है और भविष्य कि कल्पना कर रो रही है, और गीतात्मक रूप से कह रही है, अब मैं बचा हुआ समय था जीवन कौन बिताएगा या किसके माध्यम से बीतेगा क्योंकि पति उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता था अब वह है नहीं न तो किसके सहारे अपना जीवन बिताएगी।

## 1.2 अध्ययन का उद्देश्य

- रुदन गीतों का प्रकार्य, व्याख्या एवं विश्लेषण करना।
- रुदन गीत के प्रकार एवं परम्परा का पता लगाना।
- रुदन गीतों में प्रयुक्त संकेतो का पता लगाना।
- रुदन गीतों के सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक कारण का पता लगाना।

## 1.3 शोध का महत्व

रुदन गीत अपनी सरलता और स्वाभाविकता के साथ करुण होता है। इसमें अलंकार छंद, शब्द-चयन आदि का आडंबर नहीं होता है, परंतु इसके माध्यम से जो लोक परंपरा झलकती है उसकी तुलना शायद किसी से भी नहीं की जा सकती है। इसके लिए रुदन गीत का महत्व भी असीम हो जाता है। रुदन गीत समाज की धरोहर ही नहीं अपितु लोक जीवन का दर्पण भी है। रुदन गीत का अध्ययन करके मैं समस्त समाज के व्यक्तित्व का अर्थात् एक समाज विशेष की विशिष्टताओं का परिचय पा सकते हैं। इन गीतों के साथ जन मानस की आत्मा अंकित होती है, जिसे महिलाएं बहुत कारुणिक होकर गाती हैं। ये गीत जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने की अन्नत प्रेरणा प्रदान करते हैं। मनुष्य जब जीवन के संताप और उसकी सीमाओं से कुंठित हो जाता है तो वह रुदन गीतों की शरण लेता है। उससे जीवन के संतापो की झेलने की शक्ति मिलती है पिछले

तीन- चार सौ वर्षों में पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में अनेक निराशाओं का समावेश होने के कारण इन गीत का महत्व और बढ़ गया है।

रुदन गीत लोक संस्कृति का अंश हैं। लोक संस्कृति- सर्व साधारण लोगों के रीति- रिवाज, रहन-सहन, अंधविश्वास, प्रथा, परम्परा आदि विषयों का वाहक होती है। रुदन गीत, एक प्रकार का लोक गीत है और लोकगीत, लोक संस्कृति का एक हिस्सा है। लोक संस्कृति का दायरा बहुत बृहत है। इसलिए इसे कई छोटे भागों में बाटकर अध्ययन किया जाता है। रुदन गीत को संस्कृति के जिस भाग के अंतर्गत रखते हैं। उसे लोक साहित्य कहते हैं।

लोक संस्कृति के अध्ययन की परम्परा यूरोपीय विद्वानों ने प्रारंभ की थी जो अधिकतम मानवशास्त्री और पुरातत्ववेत्ता थे- यूरोपीय मानवशास्त्री जेम्स फ्रेजर ने अपनी पुस्तक 'द गोब्डेन बाऊ' को 12 भागों में लिखकर लोक संस्कृति के अध्ययन की दृढ़ आधारशीला रखी और मानवशास्त्री ई.बी.टायलर ने प्रिमिटिव कल्चर नामक पुस्तक का निर्माण दो भागों में किया जिसमें इन्होंने आदिम सभ्यता के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डाला मानवशास्त्रियों ने लोक संस्कृति को बहुत व्यापक बताया, जो जन-जीन के हर पहलू पर काम करती है। अतः मानवशास्त्रियों ने साधारण जनता के गीतों, कथाओं, गाथाओं, कहावतों के अध्ययन के लिए लोक संस्कृति की एक शाखा का निर्माण किया जिसे लोक साहित्य कहते हैं। लोक साहित्य के संकलन की परंपरा सत्रहवीं शताब्दी से मानी जाती है। काक्स मैक्समूलर, ट्रेलर, फ्रेजर आदि ने विशिष्ट शोध कार्य किया जिसके उपरान्त संपूर्ण यूरोप में लोकसाहित्य का विशिष्ट अध्ययन होने लगा।

भारत में लोक साहित्य पर कार्य और प्रसार उन्नीसवीं सदी से माना जाता है। परंतु इस दिशा में यहां के मूल भारतीयों का योगदान नगण्य रहा अंग्रेज शासक यहां की संस्कृति से अधिक प्रभावित हुए और उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति ने भारतीय लोक जनमानस के अध्ययन को अभिप्रेरित

किया। जिसके क्रम में विद्वानों ने भारत की जातियों के रीति-रिवाज, मेले-त्योहारों विवाहोत्सव आदि के संबंध में शोध कार्य एवं विशिष्ट अध्ययन किया। सन 1892 में सी.ई.ग्रोवर का ग्रंथ फोक सांग्स “ऑफ सदरन इंडिया” प्रकाशित हुआ जो भारतीय लोकगीतों का प्रथम संग्रह है इसके बाद भारती विभिन्न भाषाओं में लोकगीत लिखे गये।

लेकिन मेरे संज्ञान में अभी तक गीतात्मक रुदन पर कार्य नहीं हुआ है, जो मानव संस्कृति का अभिन्न भाग है। इसलिए मानव विज्ञान में इस विषय पर एक विशेष कार्य किया जा सकता है। वैसे तो भारतीय मानवशास्त्रियों द्वारा लोक साहित्य के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर काम किये गए हैं। मानवशास्त्री डी.एन.मजुमदार और एल.पी.विद्यार्थी ने लोक साहित्य पर जोर दिया।

सन 1930 में डी.एन.मजुमदार ने अपने अध्यक्षीय भाषाण में लोक साहित्य के अध्ययन पर जोरदार अपील की। ये रीति-रिवाज अनुष्ठान, विश्वास, लोक कथा पौराणिक कथा, लोकगीत के अध्ययन पर बल दिया, इन्होंने लोक साहित्य को मानव मस्तिष्क का प्रागैतिहास बतालाया। एल.पी. विद्यार्थी ने भी लोक साहित्य को मानव मस्तिष्क का अभिन्न अंग माना है।

अतः स्पष्ट है कि मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को सरल तथा स्वाभाविक अभिव्यक्ति लोकगीतों में जीतनी मिलती है उतनी और किसी में नहीं। श्री देवेन्द्र सत्यार्थी ने सच ही कहा है “ भारत का कोई भी चित्र भारतीय प्रथाओं रीति-रिवाजों और हमारे आंतरिक जीवन की मनोविज्ञानिक गहराई को इतने स्पष्ट तथा सशक्त ढंग से व्यक्त नहीं कर सकते हैं। इसलिए अगर मैं भारतवर्ष के विभिन्न सांस्कृतिक समूहों की विशेषताओं से परिचित होना चाहते हैं तो रूदन गीतों का अध्ययन आवश्यक है। ”

रूदनगीतों के इस महत्व की अवहेलना सामाजिक मानवशास्त्र का कोई भी विद्यार्थी नहीं कर सकता सका, कारण यह है कि आम जनता की स्वभाविक व्यवहार प्रणाली किस भांति है उनकी प्रथा व परम्परा की अनिवार्य दिशा क्या है या रही है उनके विश्वास तथा परंपराओं की प्रमुख विशेषताएं क्या है इन सब मानवशास्त्री विषयों का विश्लेषण तथा निकषम लोकगीतों के अध्ययन के बिना असंभव है।

डॉ.एस.सी दुबे ने लिखा है “वेद और स्मृतियां भारतीय संस्कृति के जिन पक्षों के संबंध में मौन है लोकगीतों अशंतः उनके संबंध में कुछ कह सकते है। आधिकतर सभ्यता की अनेक प्रथाएं जो आर्य प्रभुत्व की स्थापना के बाद भी भारत में बनी रही लोकगीतों की सहायता से समझी जा सकती है इतिहास को भी लोकगीतों तथा लोककथाओं द्वारा समझा जा सकता है।”